शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार

- मैलिनोवस्की ने प्रकार्यवाद को व्यक्तिवादी प्रकार्य कहा है।
- सांस्कृतिक तत्त्वों के प्रकार्य पर अत्यधिक बल दिया है।
- डेविस के अनुसार, "समाज में आज जो कुछ भी है, उसका तीन चौथाई भाग प्रकार्यवाद है।"
- दुर्खीम के अनुसार, "समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जिन गतिविधियों द्वारा होती है, उन्हें ही प्रकार्य कहते हैं।"

प्रकार्यवाद की विशेषताएँ - TPRC, Sr-102, 11/08/21 S.B.Ch

- प्रकार्य का सम्बन्ध सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाली इकाइयों से है।
- सभी प्रकार्य नहीं हैं, केवल उन्हीं कार्यों को प्रकार्य कहा जाता है, जो समाज द्वारा अपेक्षित होते हैं।
- प्रत्येक प्रकार्य का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रकार्य का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक एवं मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।
- प्रकार्य का प्रयोग सदैव लाभदायक या वांछनीय नहीं होता है।
- प्रकार्य केवल क्रिया ही नहीं, बल्कि समस्त क्रियाओं का योग है।
- प्रकार्य की परिभाषा मनुष्य के शरीर के आधार पर की जा सकती है।
- प्रकार्य एक जटिल अवधारणा है, क्योंकि यह देखी नहीं जा सकती।
- यह गतिशील अवधारणा है।
- समाज में प्रकार्यों की संख्या तय नहीं होती है।
- कभी-कभी प्रकार्य स्पष्ट एवं प्रकट होते हैं, किन्तु कभी-कभी अप्रकट भी होते हैं।
- प्रकार्य का सम्बन्ध इकाइयों द्वारा समाज को दिए जाने वाले सकारात्मक योगदान से है।